होता है तुरन्त ही ऋणों का निपटारा करने में उप
कर लिया जाता है। शोधन निधि अनेक प्रकार की होती
है। इसका सबसे अधिक प्रचलित रूप निम्न है—

मान लिजिए कि सरकार ने सड़क निर्माण के लिए Rs 10 करोड़ का ऋण लिया है जिसका निपटारा 10 वर्षों में होना है। सरकार ऋण लेने के समय से ही पेट्रोल पर कर लगा सकती है और उसकी प्राप्तियों को एक निधि में जमा कर सकती है यह निधि ही शोधन निधि कहलाती है। प्रतिवर्ष करों की प्राप्तियाँ तथा विनियोग से प्राप्त होने वाला ब्याज इस निधि में जुड़ता रहता है और इसप्रकार 10 वर्षों के पश्चात यह उधार ली गई मूल धन राशि के बराबर हो जाती है और तब उस समय इससे ऋण की अदायगी कर दी जाती है।

लेकिन शोधन निधि के इस्तेमाल का एक खतरा यह है कि सरकार आवश्यकता के समय सम्भव है इतना धैर्य न रख सके कि ऋण की परिपक्व तिथि तक का इन्तजार करें और उसका उपयोग इस कार्य के अलावा जिसके लिए कि मूलतः शोधन निधि का निर्माण किया गया था, अन्य किसी कार्य के लिए कर ले।

इसलिए आजकल इन निधियों से जैसे ही धन उपलब्ध होता है तुरन्त ही ऋणों का निपटारा करने में उनका उपयोग कर लिया जाता है। अथवा इनका उपयोग या तो उन बॉण्डों को अदा करने में किया जाता है जो प्रतिवर्ष परिपक्व होते हैं या उनका उपयोग बाजार के बॉण्डों को खरीदने में कर लिया जाता है।

5 अनावर्ती पूँजी कर (Capital Levy)

सरकार ऋण का निपटारा अनावर्त पूँजी कर

लगाकर भी किया जा सकता है। यह कर सरकार द्वारा आय प्राप्त करने के लिए केवल एकबार लगाया जा सकता है इसको आमतौर पर युद्ध के एकदम बाद लगाने की वकालत की जाती है ताकि युद्धकालीन अनुत्पादक ऋणों का भुगतान किया जा सके।

अनावर्त पूंजी कर के सम्बन्ध में अनेक तर्क वितर्क प्रस्तुत किए गए है -

पक्ष में तर्क

(a) युद्धकालीन ऋण जहाँ अनुत्पादक होता है वहाँ समाज के लिए फलदीन भी होता है। अतः कोई विशिष्ट कर अथवा अनावर्ती पूंजी कर लगाकर उस ऋण को एक बार में ही चुका देना अच्छा होता है।

(b) अनावर्ती पूंजी कर को इस आधार पर भी न्यायोचित ठहराया जाता है कि जिन लोगों ने युद्ध काल में भारी मुनाफे कमाए है उन्हें बिना किसी कष्ट के ऋणों का निपटारा करने में अपना अंशदान देना चाहिए।

(c) अनावर्ती पूंजी कर का प्रभाव मुद्रास्फीती विरोधी होता है क्योंकि यह धनी लोगों के हाथों में से फालतू क्रयशक्ति ले लेता है।

(d) अनावर्ती पूंजी कर द्वारा सरकारी ऋण का शोधन करने वाले उच्च आय वाले वर्ग के लोग उसी पूर्व स्थिति में बने रहते है क्योंकि वे अनावर्ती पूंजी के रूप में सरकार को जो कुछ देते है वह ऋण वापसी के रूप में सरकार से प्राप्त कर लेते है।

(e) युद्ध काल में, समाज में आय तथा धन का जो असमान वितरण होता है अनावर्ती पूंजी कर उसे घटाने में सहायक होता है। अतः यह आय एवं धन के वितरण को समान बनाता है।

(f) अनावर्ती पूंजी कर के द्वारा लोक ऋणों का एकदम

वापिस करने से लोगों को भविष्य में ऋणों की अदायगी के लिए लगने वाले कर का डर खत्म हो जाता है।

विपक्ष में तर्क

इन तर्कों के बावजूद अनावर्ती पूंजी कर के विरोध में निम्न बातें प्रस्तुत की गई है –

(a) अनावर्ती पूंजी कर विदेशों में अन्तप्रवाह (inflow) में बाधा उत्पन्न करता है जिसका दीर्घकाल में उद्योग + वाणिज्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(b) अनावर्ती पूंजी कर उन्हीं पर लगाया जाता है जो धन संपन्न अमीर बनते है। इससे कर वंचन (tax evasion) को बढ़ावा मिल सकता है।

(c) इससे लोगों के काम करने, बचत करने तथा निवेश करने की इच्छा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

इन पक्ष विपक्ष के तर्कों के बावजूद अनावर्ती पूंजी कर समय विशेष पर आवश्यक होता है। परन्तु capital levy में यह खतरा बना रहता है कि सरकार कहीं बार बार इसका आश्रय लेने को उत्सुक न हो जाए।

6 विदेशी ऋण की वापिसी (Repayment of External debt)

विदेशी ऋण का शोधन केवल अनुकूल भुगतान संतुलन के द्वारा सम्भव है जिससे ऋण चुकाने के लिए आवश्यक विदेशी विनिमय का संचय कर लिया जाए। इस उद्देश्य की प्राप्ती के लिए यह आवश्यक है कि विदेशी ऋणों का विनियोग बड़ी सावधानी से ऐसे उद्योगों में किया जाए जिनमें कि उत्पादन की भारी सम्भावनाएं मौजूद हो और प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से निर्यात में वृद्धि करें। इसके साथ ही निर्यात बेशियों (Export surplus) को वस्तुओं के रूप में रखना चाहिए जो कि तत्काल विदेशियों द्वारा खरीद

की जाती है। इसके अलावा निर्यात विधियों के लिए घरेलू उपभोग में कटौती कर ली जाए।

उपर्युक्त रीतियों के द्वारा सरकारी ऋण का भुगतान किया जा सकता है किन्तु ऋण भुगतान की रीति यदि अपनायी जाए तो ठीक है। सबसे प्रचलित एवं उपयुक्त रीति यही है कि सरकारी ऋण का कुछ भाग प्रतिवर्ष निपटा दिया जाए।

—x—

Dr Sandhya Rani
Deptt of Economics
Maharaja College